भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 3067

13 दिसम्बर, 2024 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

आयुर्वेद का आधुनिक चिकित्सा के साथ एकीकरण

3067. श्री पी.पी. चौधरी:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार द्वारा आयुर्वेद को अनुसंधान सहयोग और नैदानिक विधिमान्यकरण अध्ययनों सहित आधुनिक चिकित्सा के साथ एकीकृत करने हेतु कोई विशिष्ट पहल की गई है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) आयुर्वेद दिवस, 2023 के दौरान आरंभ की गई परियोजनाओं का ब्यौरा क्या है और उनके उद्देश्य और वित्तीय परिव्यय क्या हैं;

(ग) क्या एकीकृत उपचार तीरकों की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करने के लिए कोई अध्ययन कराया गया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(घ) सरकार द्वारा देश में आधुनिक अनुसंधान पद्धतियों के माध्यम से आयुर्वेदिक पद्धतियों और औषधियों के वैज्ञानिक विधिमान्यकरण को बढ़ावा देने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं/उठाए जाने हैं; और

(ङ) क्या नागरिकों को वैधीकृत आयुर्वेदिक उपचारों के बारे में शिक्षित करने के लिए कोई जागरुकता अभियान शुरू किया गया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यह कितने लोगों तक पहुंचा है?

उत्तर

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क): अनुसंधान सहयोग तथा नैदानिक सत्यापन अध्ययनों सहित आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा के साथ एकीकृत करने के लिए सरकार द्वारा की गई पहलों के ब्यौरे निम्नानुसार हैं:

i. भारत सरकार ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों (पीएचसी), सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों (सीएचसी) और जिला अस्पतालों (डीएच) में आयुष सुविधाओं की सह-स्थापना की कार्यनीति अपनाई है, जिससे रोगी एक ही जगह विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों का विकल्प चुन सकते हैं। आयुष चिकित्सकों/परा-चिकित्सकों की नियुक्ति और उनके प्रशिक्षण को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के तहत स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा सहायता दी जाती है, जबकि आयुष अवसंरचना, उपकरण/फर्नीचर और दवाओं के लिए सहायता राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) के तहत आयुष मंत्रालय द्वारा साझा जिम्मेदारियों के रूप में प्रदान की जाती है।

ii. अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) - नई दिल्ली में, एकीकृत चिकित्सा सेवाएं निम्नलिखित इकाइयों में एक ही स्थान पर उपलब्ध हैं:

   क) सेंटर फॉर इंटीग्रेटिव आयुष थेरेपी (यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी)

   ख) इंटीग्रेटिव कैंसर केयर यूनिट

ग) सेंटर फॉर इंटीग्रेटिव डेंटिस्ट्री

घ) सेंटर फॉर इंटीग्रेटिव क्रिटिकल केयर एंड इमरजेंसी मेडिसिन

ङ) सेंटर फॉर इंटीग्रेटिव ऑर्थोपेडिक्स

च) सेंटर फॉर इंटीग्रेटिव डायटेटिक्स एंड न्यूट्रिशन

छ) कैजुएल्टी ओपीडी सेक्शन

इसके अलावा, निम्नलिखित में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) - नई दिल्ली की अनुषंगी नैदानिक सेवा इकाइयां उपलब्ध हैं:-

क) सफदरजंग अस्पताल - नई दिल्ली में इंटिग्रेटिव मेडिकल सर्विसेज यूनिट

ख) एम्स - झज्जर में सेंटर ऑफ इंटीग्रेटिव ऑन्कोलॉजी (सीआईओ) यूनिट

ग) लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी, उत्तराखंड में आयुर्वेद अरोग्य केंद्र

घ) आरोग्य वन, एकता नगर, केवड़िया वन प्रभाग, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी एरिया डेवलपमेंट एंड टूरिज्म गवर्नेंस अथॉरिटी (एसओयूएडीटीजीए), गुजरात में आयुर्वेद आरोग्य केंद्र

iii. आयुष मंत्रालय ने अपने केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) के माध्यम से आयुर्वेद के एकीकरण के लाभों तथा व्यवहार्यता की जांच करने के लिए विभिन्न अनुसंधान अध्ययन किए हैं। इसके अलावा, बाह्य अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) तथा आयुष मंत्रालय के अधीन सीसीआरएएस ने एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल पर ध्यान केन्द्रित करते हुए चिह्नित क्षेत्रों पर अनुसंधान करने के लिए एम्स में आयुष-आईसीएमआर उन्नत एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान केन्द्र (एआई-एसीआईएचआर) स्थापित करने की पहल की है। इस कार्यक्रम के तहत, चार एम्स में चार अनुसंधान क्षेत्रों की पहचान की गई है, जो निम्नप्रकार हैं:

क. एम्स दिल्ली:
   - एडवांस्ड सेंटर फॉर इंटिग्रेटिव हेल्थ रिसर्च इन गैस्ट्रो-इंटेस्टाइनल डिसऑर्डर्स
   - एडवांस्ड सेंटर फॉर इंटिग्रेटिव हेल्थ रिसर्च इन वूमन एंड चाइल्ड हेल्थ

ख. एम्स-जोधपुर: एडवांस्ड सेंटर फॉर इंटिग्रेटिव हेल्थ रिसर्च इन जेरेएट्रिक हेल्थ

ग. एम्स-नागपुर: एडवांस्ड सेंटर फॉर इंटिग्रेटिव हेल्थ रिसर्च इन कैंसर केयर

घ. एम्स-ऋषिकेश: एडवांस्ड सेंटर फॉर इंटिग्रेटिव हेल्थ रिसर्च इन जेरेएट्रिक हेल्थ

iv. विभिन्न अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) जैसे एम्स भोपाल, एम्स भुवनेश्वर, एम्स रायपुर, एम्स गोरखपुर, एम्स पटना और एम्स ऋषिकेश में भी आयुष चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हैं।

v. भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग (एनसीआईएसएम), जो आयुष मंत्रालय के तहत एक नियामक निकाय है, ने आधुनिक चिकित्सा के साथ आयुर्वेद के ज्ञान को एकीकृत करने के लिए निम्नलिखित प्रयास किए हैं:-

- एनसीआईएसएम ने आयुर्वेद, यूनानी एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति हेतु एमबीबीएस के लिए आयुष मॉड्यूल - इंटर्नशिप इलेक्टिव्स विकसित किया है।
- भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग (स्नातक-पूर्व आयुर्वेद शिक्षा के न्यूनतम मानक) विनियम-2022 के विनियम 10 (7) के अनुसार, आयुर्वेद शिक्षण सामग्री के पाठ्यक्रम में आधुनिक प्रगति का अनुपात 40 प्रतिशत तक होगा।

(ख): आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेद दिवस, 2023 का आयोजन किया, जिसमें 1.70 करोड़ रुपये खर्च हुए। आयुर्वेद दिवस 2023 के अवसर पर, आयुष मंत्रालय द्वारा एक ग्रैंड आयुर्वेद स्टार्ट-अप चैलेंज का शुभारंभ किया गया था जिसमें वित्तीय प्रोत्साहन के तौर पर, प्रथम पुरस्कार के रूप में 5 लाख रुपये का नकद पुरस्कार, द्वितीय पुरस्कार के रूप में 2.5 लाख रुपये का नकद पुरस्कार और तीसरे पुरस्कार के रूप में 1 लाख रुपये का नकद पुरस्कार रखा गया था।

चैलेंज के मुख्य उद्देश्य निम्नप्रकार थे:

i. उन सामाजिक/क्षेत्रीय समस्याओं का पता लगाना और उनकी पहचान करना जिनका समाधान आयुष तथा आयुष क्षेत्र में स्टार्टअप्स के नवाचारों द्वारा किया जा सके।
ii. उन स्टार्ट-अप की पहचान करना और उन्हें बढ़ावा देना जिनमें आयुष क्षेत्र की चुनौतियों को हल करने की क्षमता है।
iii. आयुष क्षेत्र में सतत विकास आगे ले जाने के लिए प्रौद्योगिकी एवं नवाचार को अपनाने को बढ़ावा तथा सहयोग देना।

(ग): सीसीआरएएस ने आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ आयुर्वेद के एकीकरण के लाभों और व्यवहार्यता की जांच करने के लिए निम्नलिखित अनुसंधान शुरू किए हैं:

i. ऑस्टियोआर्थराइटिस (घुटने) के इलाज के लिए तृतीयक देखभाल अस्पताल (सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली) में आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ आयुर्वेद को एकीकृत करने की व्यवहार्यता का पता लगाने के लिए प्रचालनात्मक अध्ययन।
ii. हिमाचल प्रदेश में प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल (पीएचसी) स्तर पर राष्ट्रीय प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य सेवाओं में भारतीय चिकित्सा पद्धति (आयुर्वेद) शुरू करने की व्यवहार्यता।
iii. कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग और आघात के निवारण एवं नियंत्रण के राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीसीडीसीएस) में आयुष पद्धतियों का एकीकरण।
iv. महाराष्ट्र के चयनित जिले (गढ़चिरौली) के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य (आरसीएच) में आयुर्वेद उपचार शुरू करने की व्यवहार्यता (प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल स्तर पर प्रसव-पूर्व देखभाल (गर्भिणी परिचर्या) के लिए आयुर्वेदिक उपचार की प्रभावशीलता: एक बहु केंद्र परिचालन अध्ययन)।

इसके अलावा, अखिल आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), दिल्ली; आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए), जामनगर और राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए), जयपुर जैसे राष्ट्रीय संस्थानों ने एकीकृत उपचार दृष्टिकोणों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए निम्नलिखित अध्ययन किए हैं:-

i. बच्चों में *बीजदुष्टिजन्य पांडु* (थैलेसीमिया मेजर) के प्रबंधन में समकालीन मानक देखभाल में सहायक उपचार के रूप में *गंधकडी योग* और *शरपंखा वटी* की प्रभावकारिता- एक ओपन लेबल्ड रेंडोमाइज्ड कंट्रोल्ड नैदानिक परीक्षण।

ii. नागबाला की प्रभावकारिता - पोस्ट-मायोकार्डियल इनफार्कसन (हृदय रोग) के प्रबंधन में पारंपरिक उपचार के सहायक उपचार के रूप में अर्जुनादि योग - एक रेंडोमाइज्ड स्टैंडर्ड कंट्रोल्ड नैदानिक परीक्षण।

iii. पोस्ट कोविड 19 सिंड्रोम के प्रबंधन में वर्धमान पिप्पली रसायन और डब्ल्यूएचओ पुनर्वास दिशानिर्देशों की प्रभावकारिता - एक डबल आर्म रेंडोमाइज्ड नैदानिक परीक्षण।

iv. मेटाबोलिक सिंड्रोम के प्रबंधन में जीवन शैली में बदलाव संबंधी उपचार और त्रिफला कज्जली टैबलेट की भूमिका - एक सिंगल-ब्लाइंड, रेंडोमाइज्ड तुलनात्मक नैदानिक परीक्षण।

v. लंदन स्कूल ऑफ हाइजीन एंड ट्रॉपिकल मेडिसिन (एलएसएचटीएम, यूके) के सहयोग से यूनाइटेड किंगडम (यूके) में हल्के से मध्यम कोविड-19 लक्षणों में सुधार को बढ़ावा देने के लिए अश्वगंधा पर नैदानिक परीक्षण।

vi. कोविड-19 संक्रमण का मुकाबला करने में गुडुचयादि टेबलेट्स के मॉलेक्यूलर तंत्र को समझना - इन विट्रो-इन विवो अध्ययन, एफआईजेड, जर्मनी।

vii. गुडुच्यादि टैबलेट (टीनोस्पोरा आधारित हर्बल फॉर्मूलेशन) का हल्के से मध्यम कोविड-19 रोगियों के प्रबंधन में प्रभाव - एक डबल ब्लाइंड रैंडमाइज्ड कंट्रोल ट्रायल, वर्कश्योर मेडफार्मा प्राइवेट लिमिटेड (सीआरओ), भारत।

viii. कोविड-19 संक्रमण के रोगियों के लिए सहायक चिकित्सा के रूप में आयुर्वेद उपचार (आयुष 64) की प्रभावकारिता और सुरक्षा।

ix. आयुर्वेदिक फॉर्मूलेशन का उपयोग करके कोविड-19 रोगी के नैदानिक सुधार के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण।

इसके अलावा, एकीकृत उपचार दृष्टिकोणों की प्रभावशीलता के मूल्यांकन सहित आयुष पद्धतियों के विस्तृत साक्ष्य आधारित अनुसंधान आंकड़े, आयुष रिसर्च पोर्टल नामक विशेष पोर्टल (https://ayushportal.nic.in/) पर उपलब्ध हैं।

(घ): आयुष मंत्रालय वित्त वर्ष 2023-24 से आयुर्ज्ञान नामक केंद्रीय क्षेत्रीय योजना के तहत, आयुर्वेद जैविकी एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान घटक कार्यान्वित कर रहा है, जिसका उद्देश्य कार्यान्वयन अनुसंधान के माध्यम से मुख्यधारा में लाने के लिए मौलिक अनुसंधान के प्रमुख परिणामों को साक्ष्य आधारित पद्धतियों में साकार करने पर जोर देने वाले एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान के एक गतिशील तथा जीवंत मॉडल को आगे लाने में सहयोग करना है।

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान और सीसीआरएएस विभिन्न रोग स्थितियों में नैदानिक प्रभावशीलता तथा परम्परागत आयुर्वेद औषधियों एवं उपचारों की सुरक्षा के संबंध में साक्ष्य सृजित करने के लिए नैदानिक अध्ययन करते हैं। ये नैदानिक अध्ययन, प्रचलित दिशानिर्देशों को, यथा आवश्यकतानुसार, अपनाते हुए किए जाते हैं जैसे, एएसयू दवाओं हेतु गुड क्लिनिकल प्रैक्टिसेज गाइडलाइन्स (जीसीपी-एएसयू), आयुष मंत्रालय और ऐथिकल गाइडलाइन्स फॉर बायो-मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर), डब्ल्यूएचओ गाइडलाइन्स फॉर ट्रेडिश्नल मेडिसिंस आदि।

इसके अलावा, सीसीआरएएस ने आवश्यकता के अनुसार प्रचलित दिशानिर्देशों को अपनाते हुए, दवा विकास की एक व्यवस्थित प्रक्रिया के जरिए आयुर्वेदिक दवाओं के विकास के लिए अनुसंधान किया है जैसे मानकीकरण, गुणवत्ता नियंत्रण, सुरक्षा/विषाक्तता अध्ययन, और नैदानिक अध्ययन।

(ङ): आयुष मंत्रालय द्वारा दिनांक 01.06.2017 की राजपत्र अधिसूचना द्वारा अधिसूचित धन्वंतरी जयंती (धनतेरस) के दिन हर साल आयुर्वेद दिवस मनाया जा रहा है। यह दिन आयुर्वेद के प्रचार, प्रचार और लोकप्रियता के लिए पूरे देश में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से मनाया जाता है। सरकार ने 9वें आयुर्वेद दिवस (29 अक्तूबर, 2024) पर, 'देश का प्रकृति परीक्षण अभियान' नामक एक अभियान शुरू किया। यह अभियान दिनांक 26 नवंबर, 2024 से शुरू होकर 25 दिसंबर, 2024 तक चलेगा, जिसमें

छात्रों, शिक्षकों, आयुर्वेद चिकित्सकों, और आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारियों सहित समर्पित स्वयंसेवकों की सहायता से समर्पित मोबाइल एप्लिकेशन के जरिए आयुर्वेद के सिद्धांत के अनुसार व्यक्तिगत नागरिक की प्रकृति का मूल्यांकन करने की परिकल्पना की गई है। अभियान का लक्ष्य, लोगों को साकारात्मक स्वास्थ्य के प्रति प्रोत्साहित करना है। दिनांक 10 दिसंबर, 2024 की स्थिति के अनुसार, लगभग 1.38 लाख स्वयंसेवकों ने 18 वर्ष से अधिक की आयु वाले 26 लाख भारतीय नागरिकों की प्रकृति का मूल्यांकन किया है।

इसके अलावा, आयुर्वेद सहित आयुष चिकित्सा पद्धतियों के बारे में नागरिकों को शिक्षित करने के लिए आयुष मंत्रालय राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम), अंतर्राष्ट्रीय सहयोग संवर्धन (आईसी) और सूचना, शिक्षा तथा संचार (आईईसी) जैसी विभिन्न योजनाएं कार्यान्वित कर रहा है, जिनमें प्रामाणिक आयुर्वेदिक उपचारों के बारे में नागरिकों को शिक्षित करने के लिए जागरूकता अभियान आयोजित करने का प्रावधान है।

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान और सीसीआरएएस अपने आईईसी कार्यकलापों के माध्यम से आम लोगों में आयुर्वेद के प्रति जागरूकता पैदा कर रहे हैं जिसमें आम लोगों के लिए अंग्रेजी, हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं में इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया का प्रयोग किया जाता है, जिन्हें राष्ट्रीय/राज्य स्तरीय आरोग्य मेलों, स्वास्थ्य शिविरों, प्रदर्शनियों, एक्सपो. के माध्यम से व्यापक रूप से वितरित किया जाता है। आयुष मंत्रालय विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म यानी फेसबुक, ट्विटर, यू-ट्यूब आदि के माध्यम से आयुर्वेद सहित आयुष चिकित्सा पद्धति को डिजिटल रूप से बढ़ावा दे रहा है।

आयुर्वेद सहित आयुष के तहत भारतीय चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देने के लिए, स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रमों तथा नैदानिक मोबाइल अनुसंधान कार्यक्रमों के अलावा, अन्य आउटरीच कार्यक्रम जैसे अनुसूचित जाति उप योजना (एससीएसपी) अनुसंधान कार्यक्रम, जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान कार्यक्रम (टीएचसीआरपी) आदि भी चलाए जा रहे हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत, देश के विभिन्न भागों में विभिन्न रोगों के निवारक पहलुओं के लिए जागरूकता पैदा करने तथा रोगियों को उपचार उपलब्ध कराने के लिए अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति जनसंख्या वाले गांवों का चयन किया गया है।

आयुष मंत्रालय देश भर में अपने विभिन्न संस्थानों के माध्यम से आयुर्वेद सहित आयुष चिकित्सा पद्धतियों के बारे में नागरिकों में जागरूकता भी पैदा करता है जिसके तहत, पोषण महा अभियान, सेमिनारों/कार्यशालाओं/सम्मेलनों/स्कूल स्वास्थ्य जांच में भाग लेता है, आयुष की इकाइयों तथा उपचार केंद्रों के ओपीडी/आईपीडी के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कर रहा है, सहकर्मी-समीक्षित शोध पत्रिकाओं/समाचार पत्रों/विभिन्न पद्धतियों में बुलेटिन प्रकाशित करता है जो ऑनलाइन सुलभ हैं और अंतर्राष्ट्रीय पाठकों के लिए उपलब्ध हैं।

आयुष मंत्रालय तथा आयुष मंत्रालय के तहत स्वायत्त निकायों/सांविधिक निकायों/नियामक निकायों आदि की वेबसाइटों में भी आयुर्वेद सहित आयुष के तहत भारतीय चिकित्सा पद्धति के बारे में जानकारी दी गई है तथा इसे अन्य महत्वपूर्ण वेबसाइटों के साथ हाइपरलिंक किया गया है जो व्यापक उपयोगिता हेतु जानकारी प्रदान करते हैं।

*****